IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# लोक संस्कृति की अवधारणा

## LOK SANSKRITI KI AVDHARNA

**प्रस्तुतकर्ता**

उमा चौधरी

प्रोफेसर

हिन्दी विभाग

New Horizon College

Kasturi Nagar Bangalore - 43

**भूमिका**

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। इसकी एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि हजारों वर्षो बाद भी यह संस्कृति आज भी अपने मूल स्वरुप में जीवित है। समाज और संस्कृति की बात की जाए तो समाज और संस्कृति में गहरा संबंध है। व्यक्ति से ही समाज बनता है। समाज में संस्कार नियम और लोगों का समूह होता है। समय के अनुसार मनुष्य की सोच, खोज की वृत्ति, उन्नति की महत्वकांक्षा आदि ने मानव को अपनी संस्कृति और सभ्यता से दूर हटा दिया। वर्तमान आधुनिकता के दौर में जहाँ व्यक्ति कुंठा, निराश का शिकार हो जाता है ऐसे में परिवार से ही उसे नैतिक बल व भावानात्मक संबल मिलता है। भारतीय संस्कृति की नींव परम्पराओं पर टिकी हुई है। हमारी सभ्यता का सुंदरतम रुप है समाज जो परिवार नामक छोटी-छोटी इकाइयों से बनी होती है। भावनाओं की बुनियाद पर, विश्वास के बंधन परिवार सुरक्षित रहता है। परिवार में कर्तव्य भाव एवं दायित्व का पालन करना अहं शिक्षा होती है जो भविष्य में समाज और राष्ट्र की उन्नति में सहायक होगी।

भारतीय संस्कृति मनुष्य के भीतर छिपी हुई उसकी दिव्यता को प्रकाशित करने के प्रयत्नों का सामूहिक नाम है यह इतनी बहुआयामी है कि इसका कोई एक लक्षण निर्धारित नहीं किया जा सकता। भारतीय संस्कृति की पहचान के लिए देश के विविध धर्म, वर्ग, जाति के लोगों के व्यवहार को देखना चाहिए। अच्छा, बुरा, सही, गलत आदि का

चिंतन मनुष्य करता है। रामधारी सिंह दिनकर ने कहा है कि संस्कृति मानव जीवन में उसी प्रकार व्याप्त है जिस प्रकार फूलों में सुगन्ध और दूध में मक्खन। इसका निर्माण एक या दो दिन में नहीं होता युग-युगान्तर से संस्कृति निर्मित होती है। संस्कृति किसी भी राष्ट्र की उत्कृष्टतम निधि होती है। राष्ट्र-विशेष का जीवन-स्मरण, उसकी उन्नति-अवनति, प्रतिष्ठा आदि तथ्य उसकी संस्कृति पर आधारित रहते हैं। जिस राष्ट्र की संस्कृति जितनी उदात्त होती है, वह राष्ट्र उतना ही गौरवशाली बनता है। संस्कृति वह प्रक्रिया है जिससे किसी देश के सर्वसाधारण का व्यक्तित्व निष्पन्न होता है। इससे मानव समाज की उस स्थिति का बोध होता है, जिससे उसे सुधरा हुआ, ऊँचा, सभ्य आदि आभूषणों से आभूषित किया जाता है। (1)

सादा जीवन उच्च विचार भारतीय संस्कृति की परम्परा समझी जाती है। संस्कृति जीवन की निधि है। जो भोजन हम खाते हैं, जो कपड़े पहनते हैं, जो भाषा बोलते हैं और जिस भगवान की पूजा करते हैं, ये सभी सभ्यता कहलाते हैं। संस्कृति और सभ्यता दोनों के अर्थ अलग-अलग हैं। पहले मनुष्य जंगल में रहता था फिर प्राकृतिक आपदाओं से बचने के लिए घर बनाया। यातायात के साधन के रुप में मोटर, रेल-गाड़ी, हवाई जहाज बनाया। उसने हवा, पानी, बिजली और अणु की भौतिक शक्तियों को वश में करके ऐसी मशीने बनाई जिससे उसके भौतिक जीवन में काया-पलट हो गयी। सभ्यता का अर्थ है जीने के बेहतर तरीके। हर समाज में दो तरह के लोग होते हैं - शिक्षित वर्ग और अशिक्षित वर्ग। शिक्षित वर्ग के हाथ में होता है वह समाज का नेतृत्व करता है। शिक्षित वर्ग की तुलना में समाज का अशिक्षित वर्ग मूक अथवा कम मुखर होता है। साहित्यिक भाषा को न समझ सकने के कारण वह अपनी बोली में लोकगीत रचता है। शास्त्रीय संगीत का राग-रागिनियों के सूक्ष्म भेदों का आनंद-स्पर्श उसे प्राप्त नहीं होता।

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। इसकी एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि हजारों वर्षो बाद भी यह संस्कृति आज भी अपने मूल स्वरुप में जीवित है। भारत में नदियों , पीपल, सूर्य देवी-देवताओं की पूजा अर्चना का क्रम शताब्दियों से चला आ रहा है। गीता और उपनिषदों के सन्देश हजारों साल से हमारी प्ररेणा और कर्म के रहे हैं। संसार में किसी भी संस्कृति में शायद ही इतनी सहनशीलता हो, जितनी भारतीय संस्कृति में पाई जाती है। भारतीय संस्कृति की सहिष्णुता एवं उदारता के कारण उसमें एक ग्रहणशीलता प्रवृत्ति को विकसित होने का अवसर मिला। भारतीय संस्कृति में आश्रम-व्यवस्था के साथ धर्म, कर्म, काम और मोक्ष जैसे चार पुरुषार्थो का विशिष्ट स्थान रहा है।

जिस प्रकार यहाँ की बोलियों की गिनती नहीं, उसी प्रकार यहाँ भिन्न-भिन्न धर्मो के संप्रदायों की भी गिनती आसान नहीं पर विचार करके देखा जाए तो इन विभिन्ताओं की तह में ऐसी समता और एकता फैली हुई है जो अन्य विभिन्ताओं को ठीक उसी तरह पिरो लेती है और पिरोकर एक सुंदर समूह बना देती है, जैसे रेशमी धागा भिन्न-भिन्न प्रकार और विभिन्न रंग की सुंदर मणियों अथवा फूलों को पिरोकर एक सुंदर हार तैयार कर देता है। (2)

समाज और संस्कृति की बात की जाए तो समाज और संस्कृति में गहरा संबंध है। व्यक्ति से ही समाज बनता है। समाज में संस्कार नियम और लोगों का समूह होता है। मनुष्य की यह प्रवृति होती है कि वह हमेशा कुछ नवीन खोजने की जिज्ञासा में लिप्त रहता है और हर क्षण प्रगति की ओर उन्मुख रहता है। जैसे कोई व्यक्ति समाज के बिना नहीं रह सकता, उसी प्रकार वह समाज के सांस्कृतिक नियमों से परिपूर्ण हुए बिना सम्पूर्ण नहीं माना जाएगा। व्यक्ति का अधिकतर समय समाज में ही गुजरता है। वह समाज में रहकर ही समाज में घटित-घटनाओं के माध्यम से नित-नवीन व्यवहार हर रोज सीखता रहता है। समाज में व्यक्ति को अपना अस्तित्व स्थापित करने हेतु नैतिक मूल्यों की आवश्यकता है। नैतिक मूल्यों के अनुरुप आचरण ही उसे चरित्रवान बनाता है। सदगुणों को अपनाकर ही हमें सच्चे सुख, संतोष और आनंद की प्राप्ति होती है।

अनेक विभिन्नताओं के बावजूद भी भारत की पृथक सांस्कृतिक सत्ता रही है। भाषाओं की विविधता अवश्य है फिर भी संगीत, नृत्य और नाट्य के मौलिक स्वरुपों में आश्चर्यजनक समानता है। यह एक देश नहीं बल्कि कई देशों का एक समूह है जो एक-दूसरे से बहुत बातों में और विशेष करके ऐसी बातों में जो आसानी से आँखो के सामने आती है बिल्कुल भिन्न है। (3)

समाज परिवर्तनशील है। समय के अनुसार समाज में परिवर्तन होता रहता है। भारतीयों की आंतरिक कलह, विदेशियों का आगमन, विदेशी संस्कृति का कुप्रभाव आदि के कारण समाज में परिवर्तन होने लगे। जनता को शिक्षित होने का अवसर , पूर्व से अधिक मिलता गया। जिससे उनके देखने का दृष्टिकोण भी बदलने लगा। लोग जिस भारतीय संस्कृति की परिधि में सीमित थे उससे बाहर आने लगे। समय के अनुसार मनुष्य की सोच, खोज की वृत्ति, उन्नति की महत्वकांक्षा आदि ने मानव को अपनी संस्कृति और सभ्यता से दूर हटा दिया। उनमें मुख्यत वेशभूषा, रहन-सहन, खान-पान, व्यवहार आदि है।

आधुनिकता के नाम पर मनुष्य अपने मनोवांछित काम करने लगे और उसके पीछे भाग-दौड़ करते हैं। जिससे भारतीय संस्कृति बुनियाद पर निर्मित समाज और उसकी सभ्यता हिलने लगी है। आज ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गयी है कि मनुष्य जो भी करता है, उसे भारतीय संस्कृति ही कहते हैं। हमारी सभ्यता का सुंदरतम रुप है समाज जो परिवार नामक छोटी-छोटी इकाइयों से बनी होती है। भावनाओं की बुनियाद पर, विश्वास के बंधन परिवार सुरक्षित रहता है। परिवार में कर्तव्य भाव एवं दायित्व का पालन करना अहं शिक्षा होती है जो भविष्य में समाज और राष्ट्र की उन्नति में सहायक होगी। आज के वैश्वीकरण के युग में परिवेश के कारण भारतीय संस्कृति में भले ही कितनी विकृतियाँ और विसंगितयाँ आ गयी हो परन्तु हमारे समाज की सबसे मजबूत संस्था परिवार अभी भी अपना अस्तित्व बनाए हुए है। वर्तमान आधुनिकता के दौर में जहाँ व्यक्ति कुंठा, निराश का शिकार हो जाता है ऐसे में परिवार से ही उसे नैतिक बल व भावानात्मक संबल मिलता है। भारतीय परंपरा में छोटे उत्सव के अवसर पर या महत्वपूर्ण कार्य शुरु करने से पहले अपने बड़ो के पैरों को छूकर आशीर्वाद लेते हैं। अतिथीदेवोभव की अवधारणा में विश्वास करते है। परिवार के सबसे वरिष्ठ या सबसे पुराने सदस्य को परिवार का प्रमुख माना जाता है। आनंद और खुशी के साथ विभिन्न प्रकार के त्योंहार मनाये जाते हैं। भारतीय संस्कृति की नींव परम्पराओं पर टिकी हुई है।

सामान्य अर्थ में आधिभौतिक संस्कृति को संस्कृति और भौतिक संस्कृति को सभ्यता के नाम से अभिहित किया जाता है। संस्कृति के ये दोनों पक्ष एक -दूसरे से भिन्न होते है। संस्कृति आभ्यांतर है, इसमें परम्परागत चिंतन, कलात्मक अनुभूति, विस्तृत ज्ञान एवं धार्मिक आस्था का समावेश होता है। सभ्यता बाहय वस्तु है, जिसमें मनुष्य की भौतिक प्रगति में सहायक सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और वैज्ञानिक उपलब्धियाँ सम्मिलित होती हैं। संस्कृति साध्य है और सभ्यता साधन। जो सभ्यता निर्मित होती है, वहीं समाज द्वारा गृहीत होती है।

अंत में यदि हमें अपनी संस्कृति को जीवित रखना है व अपने समाज व देश में उन सब अन्यायों और अत्याचारों की पुनरावृर्ति नहीं करनी, जिनके द्वारा आज के सारे संघर्ष उत्पन्न होते है तो हमें अपनी ऐतिहासिक नैतिक चेतना या संस्कृति के आधार पर ही अपनी आर्थिक व्यवस्था बनानी चाहिए अर्थात् उसके पीछे वैयक्तिक लाभ और भोग की भावना प्रधान न होकर वैयक्तिक त्याग और सामाजिक कल्याण की भावना ही प्रधान होनी चाहिए।(4)

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

(1) भारतीय संस्कृति - डा.रामजी उपाध्याय - पृष्ठ संख्या - 17

(2) साहित्य शिक्षा और संस्कृति - डा.राजेन्द्र प्रसाद - पृष्ठ संख्या - 186

(3 साहित्य शिक्षा और संस्कृति - डा. राजेन्द्र प्रसाद - पृष्ठ संख्या - 185

(4) साहित्य शिक्षा और संस्कृति - डा. राजेन्द्र प्रसाद - पृष्ठ संख्या - 190